प्रकट रूप भगवान

(भाग ३)

H
294.572 Sa 21 P

य साई बाबा के

ों से संकलित

H
294.572
Sa 21.III P

प्रकट रूप भगवान्

(भाग - ३)

भगवान् श्री सत्य साई बाबा के
दिव्य प्रवचनों से संकलित

Published under arrange
Sri Sathya Sai Books &
Prashanthi Nilayam. Dis

Library IIAS, Shimla
H 294.572 Sa 21.I P-Sa 21.IV P
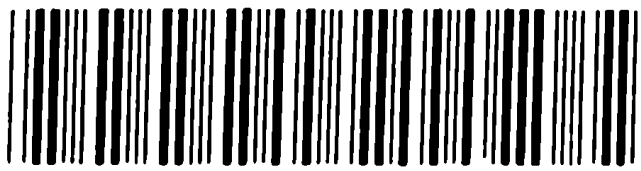
00097923

मुद्रक :
कंवलकिशोर एण्ड कम्पनी,
करोल बाग, नई दिल्ली - 5, फोन : 5724370

भक्ति सम्बन्धी भगवान की सूक्तियां

भगवान कृष्ण ने भगवद् गीता में यह आश्वासन दिया था कि "मैं उन समस्त भक्तों के कल्याण और सुख-समृद्धि का भार वहन करता हूँ जो मुझे, केवल मुझे भजते हैं और जिनकी भक्ति मेरे प्रति सदैव अटल है।"

भक्ति के सच्चे स्वरूप का अर्थ भगवान के प्रति सम्पूर्ण एकाग्रता के साथ असंदिग्ध समर्पण बताया गया है। 'प्रकट रूप भगवान'—भाग-३ भक्ति संबंधी भगवान बाबा की समय समय कही हुई सूक्तियों का संग्रह है। यदि भगवान का यह प्रेरणादायक संदेश हमारे कानों में गूंजता रहे तो हम अपनी श्रद्धा और आस्था के स्वरों को और बलवान बनायेंगे और इस प्रक्रिया में अपने जीवन में आनन्द और शांति का अनुभव करेंगे। जीवन की सार्थकता इसी में है।

—साईराम

दैवी आश्वासन

ईश्वर का कथन है कि यदि तुममें ईश्वर के प्रति भक्ति है तो वह स्वयं तुम्हारे भविष्य की देखभाल करेगा। वह तुम्हारे समस्त कल्याण का पूरा ध्यान रक्खेगा।

भक्ति से प्रभु को जीता जा सकता है

परमात्मा को न तो नाद (संगीत) और न वेद (ज्ञान) से जीता जा सकता है। वह केवल भक्ति से ही प्राप्त हो सकता है।

सर्वोच्च और अन्तिम डग

जब हम श्रद्धा और भक्ति की बात करते हैं तो हमें स्मरण रखना चाहिए कि भक्ति छः प्रकार की होती है : शांत भक्ति, सख्य भक्ति, वात्सल्य भक्ति, अनुराग भक्ति, दास्य भक्ति तथा मधुर भक्ति इन सब में मधुर भक्ति—सर्वोच्च और अन्तिम डग है। यह पूर्ण का स्वरूप है।

प्रभु से लगन लगाओ

हर परिस्थिति में समस्त शक्तियों के स्रोत और अक्षय भंडार, उस परमात्मा से लगन लगाओ। यदि ऐसा करोगे तो तुम उस स्रोत से जितनी भी शक्ति चाहो प्राप्त कर सकते हो। यह सम्बन्ध ही भक्ति है। भक्ति से प्रेम उत्पन्न होगा क्योंकि भक्ति स्वयं प्रेम से उत्पन्न होती है।

सच्चा भक्त

जो भी व्यक्ति विवेक और त्याग से, विनम्रता और बुद्धि से परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचानते हैं, जो निरन्तर भगवान की लीलाओं के चिंतन में डूबे रहते हैं, जो हर दशा में भगवान का नाम-स्मरण करते रहते हैं, तथा जिनके नेत्रों से सहज ही भगवान का नाम रूप गुणगान सुनकर अश्रु प्रवाहित होने लगते हैं, वे ही मेरे सच्चे भक्त हैं।

भक्ति से मुक्ति तक

भक्ति से शक्ति प्राप्त होती है और शक्ति युक्ति प्रदान करती है। युक्ति वांछनीयं (उचित) पदार्थों के प्रति ही आपकी (अनु) रक्ति करती है, और इस प्रकार आपकी भक्ति उत्तरोत्तर मुक्ति में परिणत होती है।

वेदों के अनुसार भक्ति

यद्यपि भक्ति के अनेकों मार्ग हैं, वेदो ने हमें उनमें से तीन प्रमुख बताये हैं— पुष्टि भक्ति, मर्यादा भक्ति और प्रवाह भक्ति।

पुष्टि भक्ति-१

पुष्टि भक्ति द्वारा आप सामान्य पुरुषार्थों का पालन किए बिना ही सीधे भगवत्कृपा प्राप्त कर सकते हैं। अपने पूर्व जन्मों में संचित पुण्य के आधार पर ही तुम्हें भगवान की भक्ति मिल पाई है। यह मार्ग पुष्टि भक्ति मार्ग कहलाता है।

पुष्टि भक्ति-२

पुष्टि भक्ति का अर्थ भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण भी कहा जा सकता है। ऐसा व्यक्ति जो भी कर्म करेगा, उसे भगवान द्वारा किया हुआ तथा उसकी कृपा का फल समझकर करेगा। प्रह्लाद और राधा इस श्रेणी के भक्तों में अग्रगण्य हैं। उनमें जन्म से ही इस प्रकार की भक्ति थी। उन्हें भगवत्कृपा प्राप्ति के लिए किसी सिद्ध अथवा गुरु की आवश्यकता नहीं पड़ी, न ही उनको किसी प्रकार की साधना करनी पड़ी।

मर्यादा भक्ति-१

जो लोग वेदों में पारंगत हैं और ऋषि मुनियों के पास जाकर गुरुकृपा से ईश्वर को प्राप्त करते हैं, ऐसे लोगों की भक्ति मर्यादा भक्ति कहलाती है। ऐसे व्यक्ति धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चारों पुरुषार्थों का पालन करते हैं तथा इस प्रकार

भगवत्कृपा की महिमा को समझते हैं।

मर्यादा भक्ति-२

दैनिक अभ्यास के लिए चारों पुरुषार्थों को दो भागों में बाँटा गया है। उन्होंने (मर्यादा भक्तों ने) धर्म और अर्थ को एक वर्ग में और काम और मोक्ष दूसरे में डाला है। उनका विश्वास है कि धन का उपार्जन धर्मानुसार होना चाहिए। वे यह भी मानते हैं कि धन धर्म का पालन करने के लिए आवश्यक है। वे यह मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को मोक्ष प्राप्ति का प्रयत्न करना चाहिए। ऐसे लोग अपने प्रयत्नों से, अपनी साधना के बल पर भगवान की कृपा प्राप्त करते हैं।

प्रवाह-भक्ति

हमें यह पहले समझ लेना चाहिए कि जन्म और मृत्यु के इस अनवरत चक्र में पड़कर बार-बार जन्म लेना व्यर्थ है। इस प्रकार की प्रवाह भक्ति चोर के समान है। जिस प्रकार चोर बार-बार चोरी करके

हर बार वापस जेल में भेज दिया जाता है। इसी प्रकार मनुष्य जन्म लेता है, व्यर्थ की बातों और विषयों में पड़कर अपना जीवन गंवाता है और पुनः जन्म लेता है। इस प्रकार वह जन्म-मृत्यु के चक्कर से छुटकारा नहीं पाता।

प्रेम का दान

प्रभु के प्रति भक्ति तुम्हें आनन्द, समृद्धि और शांति प्रदान करेगी। वह न तो तुम्हें कष्ट देती है, न व्याकुल बनाती है और न कोई व्यक्तिगत चिंता ही प्रदान करती है। वह प्रेम प्रदान करती है और सम्पूर्ण मानवता को भ्रातृभाव से बाधंती है।

निर्बाध-भक्ति-प्रवाह

भक्ति का प्रवाह निरंतर निर्बाध गति से बहना चाहिए जैसे तेल का प्रवाह एक पात्र से दूसरें पात्र में जाता है।

विशेष भक्ति

भक्ति की दो श्रेणियाँ हैं— सहज भक्ति और विशेष भक्ति। सहज भक्ति पूजा, नाम-स्मरण, भजन, व्रत, तीर्थ यात्रा आदि से संतुष्ट हो जाती है। विशेष भक्ति में भक्त दया, प्रेम, शांति, आनंद आदि और आचरण की पवित्रता तथा इंद्रिय दमन का प्रयत्न करता है और मानव कहाँ से आया और क्यों आया, ऐसे प्रश्नों का हल खोजता है।

भक्ति, कर्त्तव्य और अनुशासन

किसी पूरे शरीर में जो स्थान सिर का है, वही भक्ति का है। जो स्थान तने का है, वह कर्त्तव्य का है और जो स्थान पैरों का है, वह अनुशासन का है। जब भक्ति को कर्त्तव्य से जोड़ते हैं और अनुशासन द्वारा उसे आगे बढ़ाते हैं, तब सफलता निश्चित है।

सच्ची भक्ति

सच्ची भक्ति को कभी हतोत्साहित नहीं होना

चाहिए और न थोड़ी सी सफलता से संतुष्ट अथवा गर्व से भरना चाहिए। सच्ची भक्ति को असफलता, हानि, छल, विपत्ति, निन्दा अहं, मिथ्याभिमान, अधैर्य तथा कायरता से भयंकर संघर्ष करना चाहिए।

हर व्यक्ति में प्रभु के दर्शन करो

पूजाघर की चारदीवारी में भक्ति को बंद करके नहीं रखना चाहिए और न वह उतने समय रहनी चाहिए जितने समय तुम ध्यान करते हो। यह चौबीस घण्टे की साधना है। प्रत्येक व्यक्ति को भगवान का प्रतीक समझकार उसके प्रति भक्ति भाव प्रदर्शित करो। हर व्यक्ति में प्रभु के दर्शन करो।

भक्ति की कोई जाति नहीं होती

भक्ति की कोई जाति नहीं होती। वह सभी की रक्षा करती है, सभी को ऊँचा उठाती है। पुरुष सूत्र में चार वर्णों की उत्पत्ति शरीर के चार अंगों से की गई है। कहने का तात्पर्य यह है कि सभी उच्च कुल

में उत्पन्न हैं और सबका एक-सा महत्व है।

सच्ची भक्ति

भगवान के प्रति निर्बाध प्रेम का प्रवाह ही सच्ची भक्ति है।

भक्ति से भगवान पिघलते हैं

भक्ति अग्नि के समान है; अग्नि तो लोहे को भी पिघला देती है ईश्वर भी सच्ची भक्ति से पिघल जाता है।

अमूल्य क्या है?

राम ने शबरी से कहा, "माँ! मुझे मात्र भक्ति चाहिए; शेष सब वस्तुएं गौण हैं। अन्य वस्तुएं जैसे विद्वता, प्रज्ञान, सामाजिक स्तर, प्रतिष्ठा, जाति आदि का कोई महत्व नहीं। मेरी दृष्टि में इनका कोई मूल्य नहीं।"

प्रभु कृपा कैसे प्राप्त हो?

जिस व्यक्ति के हृदय में प्रेम नहीं है, वह बिना भाप के बादल के समान है, बिना फल वाले वृक्ष

के समान है, या दूध न देने वाली गाय के समान है। वह ईश्वर से सदा बहुत दूर है, और उसे प्रभु की कृपा कभी प्राप्त नहीं हो सकती।

भक्ति माधुर्य

आध्यात्मिक अनुशासन द्वारा सिद्धी की अपेक्षा मुझे प्रेम से परिपूर्ण भक्ति की मधुरता कहीं अधिक रुचिकर है।

प्रभु के प्रति अटल भक्ति

भक्ति भगवान के प्रति अटल स्वामिभक्ति है। ईश्वर तुम्हारे समक्ष साकार सगुण-स्वरूप में प्रकट होता है ताकि तुम उससे प्रेम कर सको, उसकी सेवा कर सको और उसका अनुसरण कर सको।

हृदय का आधार

भक्ति कोई वेषभूषा नहीं है कि जिसे तुम पूजा करते समय विशेष दिनों में पहन लेते हो और जब सेवा समाप्त हो जाती है, तो उतार कर रख देते

हो। भक्ति का अर्थ एक ऐसी प्रवृत्ति का उदय और प्रगति है। जो सदैव विद्यमान रहती है। जिस प्रकार शरीर का आधार भोजन है, उसी प्रकार हृदय का आधार भक्ति है।

धैर्य और सहन शक्ति प्रदान करना

भक्ति मधु, मन को स्फूर्ति और शांति पहुंचाने वाली होती है और उत्तेजना को शांत करती है। वह धैर्य और सहनशक्ति प्रदान करती है।

वासुदेव: सर्व मिदम

(वासुदेव ही सब कुछ हैं)

भक्त को यह विश्वास होना चाहिए कि विश्व में जो कुछ है वासुदेव है : 'वासुदेव: सर्व मिदम्'। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य की अपनी आत्मा ही सब जगह है, सब वस्तुओं में है। इस सत्य का अनुभव करना चाहिए, इस पर चलना चाहिए और इसी को धारण करना चाहिए।

प्रेम को ईश्वरोन्मुख करो

ईश्वर के प्रति जो प्रेम उन्मुख होता है, उसे ही भक्ति कहते हैं।

मनुष्य केवल रोटी द्वारा जीवित नहीं रहता

मनुष्य केवल रोटी द्वारा जीवित नहीं रहता। वह आत्मा के बल पर जीवित है। भक्ति (लालच) और युक्ति (छल) के स्थान पर भक्ति और आसक्ति (समर्पण) ही मनुष्य के जीवन का आधार होना चाहिए क्योंकि इसी के द्वारा मनुष्य के हृदय में आध्यात्मिक ज्ञान का उदय और विकास होता है।

ईश्वरत्व सर्व व्यापी है

भक्त के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा समर्पण का अर्थ तभी स्पष्ट होता है जब तुम यह स्वीकार कर लेते हो तथा इस पर विश्वास करने लगते हो कि ईश्वरत्व प्रत्येक पदार्थ और प्राणि मात्र में है अर्थात् वह सर्वव्यापी है।

शरणागति

शरणागति अर्थात् प्रत्येक वस्तु को प्रभु की इच्छा पर छोड़ देना ही सर्वश्रेष्ठ भक्ति का रूप है।

श्रद्धा का किराया

यह शरीर एक किराये पर दिया हुआ मकान है। ईश्वर इसका स्वामी है। जब तक उसकी इच्छा है तब तक उसमें रहो और उसका ध्यान करते हुए उसे श्रद्धा और भक्ति का किराया देते रहो।

भक्ति रहित लोग

उस बादल के समान जो वर्षा नहीं करता, और इधर उधर आकाश में भटका करता है, भक्ति के अभाव में लोग ऐसे मेघों के समान पवन की कृपा पर रहते है, भले ही जाति, सम्पत्ति, शक्ति तथा ख्याति की दृष्टि से उनका पद कितना ही ऊँचा क्यों न हो?

परब्रह्म की उपासना

अधिकाधिक प्रेम द्वारा परब्रह्म की उपासना ही

भक्ति कहलाती है। मैं ऐसे सभी भक्तों पर कृपा की वर्षा करता हूँ। भक्ति द्वारा उसे पूर्ण समृद्धि प्राप्त होगी।

भक्ति का आनन्द

भक्ति द्वारा जो आनन्द प्राप्त होता है वह असीम और अद्वितीय है। मनुष्य भक्ति के मार्ग पर पहले पहल चलना कैसे आरंभ करता है? यह सब किसी महान् आत्मा, साधु-संत अथवा सिद्ध पुरुष की दया का फल होता है। इस मार्ग पर चलकर मनुष्य मेरे निकट शीघ्र ही पहुंच जाता है।

भक्त

भक्त वही है जो स्वामी के हृदय को द्रवित कर सके और अपनी भक्ति का प्रमाणपत्र भी उससे प्राप्त कर सके।

भक्ति का अर्थ है पूर्ण समर्पण

भक्ति पूर्ण समर्पण है। साधना, अनुशासन और सच्चरित्रता से ही प्रभु की अनुकम्पा प्राप्त होती है।

मोक्ष का एक मात्र मार्ग

भगवतप्रेम ही मोक्ष का एक मात्र मार्ग है। जन्म और मृत्यु के कष्टों से, जो तुम्हें इस संसार में घेरे रहते हैं, केवल हरिनाम स्मरण ही छुटकारा दिला सकता है। पवित्र मन को निष्काम भाव से हरि-चिंतन में लगाना ही भक्ति है।

प्रभु की ओर

भक्ति का मार्ग ही तुम्हारे तन, मन और कर्म को ईश्वरोन्मुख करेगा। जिस प्रकार सरिता समुद्र की ओर बहती है, तुम्हारी जीवन सरिता का प्रवाह प्रभुरूपी महासागर की ओर होना चाहिए।

सच्ची अनुभूति

भक्ति ही एकता रूपी भगवत्ता का अनुभूति के द्वारा व्यक्ति को ज्ञान की ओर ले जाती है। इस प्रकार भक्ति ज्ञान में बदल जाती है। जिस प्रकार बचपन आगे चलकर वृद्धावस्था में परिवर्तित होता है

और वहां परिपक्क फल देता है, इसी प्रकार साधना के बल पर भक्ति ज्ञान का रूप ले लेती है।

ईश्वीय अंग

भक्ति यह बतलाती है कि ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु में विद्यमान है। इसलिए तुम्हारे हृदय में प्रभु के प्रति प्रेम का जो सागर लहरा रहा है, उसका सम्पूर्ण प्रवाह प्राणिमात्र की ओर होना चाहिए क्योंकि सभी उस परमात्मा के अंग हैं।

श्रेष्ठतम आदर्श से अपने को जोड़ो

भक्ति भक्त की सभी अंतरंग क्रियाओं का अपने उस आदर्श की क्रियाओं से तादात्म्य है जिससे वह अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

उसकी अनुकम्पा का प्रकाश

परमात्मा करोड़ों सूर्यों से भी अधिक जाज्वल्वमान है, किन्तु यदि आप इससे विमुख हैं तो आप उसकी कृपा की किरण नहीं पा सकते।

प्रत्येक व्यक्ति को परम भक्ति द्वारा अपने को उसका प्रिय पात्र बनाना पड़ता है। यही भक्ति की महिमा है।

शरणागति का भाव

भक्ति और उसका अंतिम फल अर्थात् पूर्ण शरणागति, यह किसी भी संकट में आपको महान् शक्ति प्रदान करेगी। इसी साहस और शक्ति का नाम वैराग्य है।

भक्ति द्वारा अनुशासन

ईश्वर के प्रति भक्ति अपने लक्ष्य तक पहुंचने का अनुशासन का एक रूप है। जो कर्म प्रभु को प्रसन्न करे उसका सम्पादन कहीं अधिक श्रेष्ठ है, उस कर्म से जो भक्त की इच्छाओं को पूरा करता है।

सच्ची परम भक्ति

भक्त की सम्यक् दृष्टि को भ्रमित करने वाले जंजालों से बचने के लिए तुम्हें अपने में भक्ति, प्रेम और ज्ञान की उत्पत्ति करनी चाहिए। यह

उपलब्धि केवल गोपिकाओं में थी क्योंकि उनमें भक्ति की अतिशयता थी। वेद और शास्त्रों से प्राप्त ज्ञान यदि वह तुम्हें प्रभु के चरणों तक पहुंचाने में असमर्थ है, किसी काम का नहीं।

भक्ति परिपक्व होकर ज्ञान बन जाती है

भक्ति जब ज्ञान में मग्न हो जाती है, तो तदाकार हो जाती है। उनमें कोई अन्तर नहीं रहता है। भक्ति ही परिपक्क होकर ज्ञान बन जाती है।

गीता की पुकार

"मैं उन समस्त भक्तों के कल्याण और सुख समृद्धि का भार वहन करता हूँ, जो एकमात्र मुझे ही स्थिर भक्ति से भजते हैं, और जिनकी भक्ति मेरे प्रति सदैव अटल है।"

इस प्रकार भगवान श्री कृष्ण ने श्री मद्भगवद् गीता में अनन्य भक्ति के स्वरूप का वर्णन किया है। अनन्य भक्ति प्रभु के प्रति अटल और एकांकी प्रेम

है जो पूर्ण समर्पण चाहता है।

परमात्मा तुम्हारे अन्दर है।

पूजा के लिए भगवान का एक फोटो रख लेना और नित्यप्रति उसकी आरती करना और 'बाबा' 'बाबा' चिल्लाना भक्ति नहीं है। सच्ची भक्ति का अर्थ है तुम्हारे वर्तन और व्यवहार में परिवर्तन। परमात्मा तुम्हारे अंतरतम में है और तुम्हारे चारों ओर है। वह सर्वव्यापी है। इस सत्य को पहचानते हुए तुम्हें इस परिणाम पर पहुंचना चाहिए कि तुम और परमेश्वर एक ही हो।

प्राणी और परमात्मा

जिस प्रकार लोहे का एक टुकड़ा चुम्बक के प्रति स्वयं आकर्षित होता है, इसी प्रकार प्राणी भी परमात्मा के प्रति आकर्षित होता है और अन्त में उससे दृढ़ता पूर्वक जुड़ जाता है।

मानवता रहित भक्ति

मानवता रहित भक्ति, देशप्रेम रहित नैतिकता

किसी काम की नहीं। इससे समाज की हानि होती है।

नि:स्वार्थ कर्म

यदि सभी कामों को भगवान का काम समझकर किया जाए तो वे ममकार अथवा अहंकार के स्पर्ष से मलिन न हो सकेंगे।

भक्ति मन को कोमल बनाती।

भक्ति का काम है मन को कोमल बनाना, उसे उच्चादर्शों और भावनाओं तथा परिष्कार करने वाली अनुभूतियों के प्रति ग्रहणशील बनाना।

भगवत्कृपा के महासागर की ओर

अपने प्रेम को एक दिशा में भगवत्कृपा के महासागर की ओर बहने दो। इसी साधना को भक्ति कहते हैं।

विहंग मर्कट और पिपीलिका भंक्ति

भक्ति तीन प्रकार की होती है: विहंग पद्धति, मर्कट पद्धति और पिपीलिका पद्धति। विहंगम

पद्धति में जिस प्रकार पक्षी पके हुए फल की ओर झपटता है, उसी प्रकार भक्त भी बहुत अधीर हो जाता है, और उस अधैर्य के कारण जो फल उसे प्राप्त होता है, वह उसकी पकड़ से निकलकर गिर जाता है। मर्कट पद्धति में जिस प्रकार मर्कट एक के बाद एक फल वृक्ष से तोड़ता है, किन्तु अपनी अस्थिर मति के कारण यह निश्चय नहीं कर पाता कि उसे कौन सा फल चाहिए, इसी प्रकार भक्त भी संशय और अनिश्चय के कारण अपना लक्ष्य बदला करता है और इस प्रकार सफलता उसके हाथ से निकल जाती है। तीसरी पद्धति पिपीलिका पद्धति है जिसमें पिपीलिका या चींटी धीरे-धीरे, पर दृढ़ता से मधुरता की ओर बढ़ती जाती है, भक्त भी बिना अपने ध्यान को इधर उधर भटकाये प्रभु के चरणों की ओर लगाये रखता है और अंत में प्रभु की कृपा प्राप्त करता है।

Library
IIAS, Shimla
H 294.572 Sa 21.I P-Sa 21.IV P
00097923